जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

दिनांक 12 नवम्बर, 2004 भगवान महावीर निर्वाणोत्सव पर हार्दिक शुभ कामनायें।

वर्ष : 27, अंक : 15 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
नवम्बर (प्रथम)2004 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी | वार्षिक शुल्क : 25 रु., एक प्रति : 2/-

पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट, जयपुर द्वारा आयोजित ह्न

सातवाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर सानन्द सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट, जयपुर द्वारा आयोजित सातवें आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का उद्घाटन मुख्यअतिथि के रूप में पधारे विश्व आयुर्वेद परिसंघ के महामंत्री वैद्य श्री कैलाशनाथजी शर्मा के करकमलों से दिनांक 17 अक्टूबर को हुआ।

समारोह की अध्यक्षता श्री पीयूषजी बज कोटा एवं श्री अजीतप्रसादजी जैन दिल्ली ने संयुक्तरूप से की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री कमलचन्दजी बोहरा कोटा एवं श्री सुरेन्द्रकुमारजी जैन कोटा मंचासीन थे। इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने ट्रस्ट का परिचय देते हुए वर्तमान समय में आध्यात्मिक शिविरों की उपयोगिता पर प्रकाश डाला।

सभा का संचालन पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने किया।

उद्घाटनसभा के पूर्व श्री नेमीचन्दजी पहाड़िया, पीसांगन के करकमलों से झण्डारोहण हुआ।

शिविर में प्रतिदिन प्रात: एवं रात्रि में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचनसार परमागम के शुभपरिणामाधिकार पर मार्मिक व्याख्यान हुये।

रात्रि में डॉ. भारिल्ल के प्रवचनों के पूर्व पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, पण्डित रमेशचन्दजी जैन, डॉ. दीपकजी जैन, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित अशोकजी शास्त्री तथा तीन दिन पण्डित शैलेषभाई शाह के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

दोपहर की व्याख्यानमाला में क्रमश: डॉ. श्रेयांसकुमारजी सिंघई, पण्डित कमलकुमारजी जैन, पण्डित कान्तिकुमारजी पाटनी, डॉ. भागचन्दजी जैन, डॉ. राजेन्द्रकुमारजी बंसल, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री एवं पण्डित प्रवीणकुमारजी शास्त्री के प्रवचनों का लाभ मिला।

प्रतिदिन पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल द्वारा षट्कारक, ब्र. यशपालजी जैन द्वारा दोनों समय गुणस्थान विवेचन, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक एवं नयचक्र, पण्डित नरेन्द्रकुमारजी शास्त्री द्वारा छहढाला, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील द्वारा तत्त्वार्थसूत्र तथा पण्डित संजीवकुमारजी गोधा द्वारा क्रमबद्धपर्याय पर कक्षायें ली गईं।

दिनांक 23 अक्टूबर को श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा '**प्रमुख जैन सिद्धांत : पूज्य गुरुदेवश्री की दृष्टि में**' विषय पर गोष्ठी रखी गई। तथा दिनांक 24 अक्टूबर को अकलंक शिक्षण संस्थान बांसवाड़ा के विद्यार्थियों द्वारा '**तत्त्वगोष्ठी**' रखी गई।

शिविर के मध्य योगसार प्राभृत, ऐसे क्या पाप किये, जैन के.जी. (मराठी), पंचास्तिकाय पद्यानुवाद एवं चौबीस तीर्थंकर वन्दना, अन्तर्द्वन्द, सिद्धचक्र मण्डल विधान, रामकहानी, छहढ़ाला, क्रिया-परिणाम-अभिप्राय आदि 15 पुस्तकों का विमोचन किया गया तथा अन्तिम दिन महाविद्यालय की सभी कक्षाओं में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त छात्रों को पुरस्कृत किया गया।

इस शिविर के आमंत्रणकर्त्ता श्रीमती राजकुमारी महावीरप्रसादजी सरावगी परिवार कोलकाता, श्रीमती श्रीकान्ताबाई पूनमचन्दजी छाबड़ा परिवार इन्दौर, श्री भगवानजी कचराभाई शाह की स्मृति में श्रीमती पुष्पाबेन भीमजीभाई शाह परिवार लंदन एवं एक मुमुक्षुभाई मुम्बई थे।

एक सौ सत्तर तीर्थंकर विधान के आमंत्रणकर्त्ता श्रीमती प्रेमाबाई शांतिलालजी सर्राफ परिवार खिमलासा एवं श्री किशोरकुमारजी मोतीलालजी पाटनी परिवार नान्देड थे।

इस अवसर पर प्रतिवर्ष अक्टूबर माह में आयोजित होनेवाले शिक्षण-शिविर के **परम संरक्षक** के रूप में श्रीमती मानकुंवर माधवसिंहजी जैन सुपुत्र श्री निहालचन्दजी घेवरचन्दजी जैन जयपुर, श्रीमती बसन्तीबाई सनतकुमार जैन भोपाल एवं श्रीमती स्व. शकुन्तलादेवी की स्मृति में श्री जवाहरलालजी जैन (फिरोजाबादवाले) जयपुर ने स्वीकृति प्रदान की।

शिविर में पूरे देश से पधारे 939 आत्मार्थियों ने धर्मलाभ लिया।

इस अवसर पर 65 हजार रुपयों का सत्साहित्य एवं 17 हजार रुपयों के सी.डी. एवं ऑडियो कैसिट्स घर-घर पहुँचे। ●

साधना चैनल पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचन प्रतिदिन प्रात: 6:45 बजे अवश्य सुनें।
साधना चैनल आपके यहाँ न आता हो तो श्री पंकज जैन (साधना चैनल) से 011-32106419 नम्बर पर सम्पर्क करें।

सम्पादकीय –

पञ्चास्तिकाय परिशीलन

18 ह्न रतनचन्द भारिल्ल

गाथा–२५

समओ णिमिसो कट्ठा कला य णाली तदो दिवारत्ती।
मासोदुअयणसंवच्छरो त्ति कालो परायत्तो ।।२५।।

(हरिगीत)

समय निमिष कला घड़ी दिनरात मास ऋतु अयन।
वर्षादि का व्यवहार जो वह पराश्रित जिनवर कहा।।२५।।

गाथा २४ में यह कह आये हैं कि निश्चय कालद्रव्य पुद्गल के २० गुणों से रहित है तथा अगुरुलुघक, अमूर्त और वर्तना लक्षणवाला है।

अब इस २५ वीं गाथा में व्यवहारकाल का स्वरूप बताते हुए आचार्य कुन्दकुन्ददेव कहते हैं कि ह्न समय, निमिष, काष्ठा, कला, घड़ी, अहोरात्र, मास, ऋतु, अयन और वर्ष आदि व्यवहारकाल पराश्रित है।

आचार्य अमृतचन्द्र टीका में 'पराश्रितपने' के स्पष्टीकरण में कहते हैं कि ह्न व्यवहारकाल का माप दर्शाने की अपेक्षा व्यवहारकाल में पराश्रितपना है। जैसे ह्न 'समय' को परिभाषित करने के लिए पुद्गल परमाणु का सहारा लिया है। यद्यपि 'समय' के अस्तित्व के लिए परद्रव्य रूप परमाणु की जरूरत नहीं है; परन्तु 'समय' किसे कहते हैं ह्न यह बताना हो तो कहना पड़ेगा कि ''एक पुद्गल परमाणु को अपनी मन्दगति से गमन करते हुए एक आकाशप्रदेश से निकटवर्ती दूसरे आकाश प्रदेश तक पहुँचने में जितना काल लगता है, वह 'समय' है।

इसतरह परमाणु के गमन के आश्रित समय है, आँख मिचने के आश्रित निमिष है; निमिष की अमुक संख्या से काष्ठा, कला और घड़ी होती है। सूर्य के गमन के आश्रित दिन–रात हैं; दिन–रात की संख्या से मास, ऋतु, अयन और वर्ष होते हैं।

उपर्युक्त व्यवहारकाल के माप के किए परद्रव्य का आलम्बन आवश्यक होने से इसे उपचार से पराश्रित कहा है। वस्तुत: कालद्रव्य की सत्ता के लिए परद्रव्य का आलम्बन नहीं है, अत: निश्चयकाल स्वतंत्र है।

समय की परिभाषा ऊपर कह आये हैं। निमिषादि की परिभाषायें इसप्रकार हैं ह्न

निमिष ह्न आँख के पलक झपकने में जो समय लगे, वह निमिष है। एक निमिष असंख्यात समय का होता है।

काष्ठा ह्न पन्द्रह निमिष की काष्ठा है।

घड़ी ह्न बीस से कुछ अधिक कला की एक घड़ी होती है।

मुहूर्त ह्न दो घड़ी का एक मुहूर्त बनता है।

अहोरात्र ह्न यह सूर्य के गमन से जाना जाता है। एक अहोरात्र तीस मुहूर्त का अर्थात् २४ घंटे का होता है।

मास ह्न तीस अहोरात्र का एक मास होता है।

ऋतु ह्न दो मास की ऋतु होती है।

अयन ह्न ३ ऋतु का एक अयन और २ अयन का एक वर्ष होता है।

आचार्य जयसेन की टीका में दो प्रश्नों के माध्यम से काल द्रव्य को स्पष्ट किया गया है ह्न

प्रश्न – जो सूर्य की गति आदि क्रिया–विशेष से ज्ञात होता है, वही काल है, इससे भिन्न और कालद्रय क्या है ?

उत्तर – ऐसा नहीं है, वस्तुत: बात यह है कि जो सूर्य की गति आदि से व्यक्त हुआ वह तो व्यवहार काल है और जो सूर्य की गति के परिणमन में सहकारी कारण है, वह निश्चय कालद्रव्य है।

प्रश्न – सूर्य की गति आदि के परिणमन में तो धर्मद्रव्य सहकारी कारण या निमित्त है, गति के परिणमन में कालद्रव्य को कारण क्यों कहा ?

उत्तर – सहकारी कारण अनेक भी हो सकते हैं, धर्मद्रव्य तो गति में हेतु होता है और गति के समय जो पर्यायरूप परिणमन होता है, उसमें जो निमित्तकारण है, वह निश्चय कालद्रव्य है। जैसे घट की उत्पत्ति में कुम्भकार, चक्र, चीवर आदि अनेक निमित्तकारण हैं, वैसे ही सूर्य के परिणमन में धर्मद्रव्य व कालद्रव्य को सहकारीकारण मानने में बाधा नहीं है।

प्रश्न – 'समय' की परिभाषा में एक ओर बताया है कि ह्न एक पुद्गल परमाणु को निकटवर्ती आकाश प्रदेश से दूसरे प्रदेश तक मन्दगति से गमन में जितना काल लगता है, वह समय है और दूसरी ओर यह कहा है कि ह्न एक पुद्गल परमाणु की ऐसी सामर्थ्य है कि वह एक समय में चौदह राजू प्रमाण आकाश के प्रदेशों में गमन करता है। यह परस्पर विरुद्ध है। चौदह राजू के असंख्य प्रदेशों तक गमन करने में असंख्य समय लगना चाहिए।

उत्तर ह्न एक समय के माप में एक पुद्गल परमाणु को एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश तक मंदगति से जाने की बात कही है और चौदह राजू जाना तीव्र या शीघ्रगति से गमन की अपेक्षा कहा है।

कविवर हीरानन्दजी ने समय, निमिष, काष्ठा, कला, नाली(घड़ी) दिन–रात, मास, ऋतु, अयन को पद्य में इसप्रकार परिभाषित किया है ह्न

(सवैया इकतीसा)

परमानु उलटै की वरतना समै नाम,
नैनौंपुटबीचि लसै नैमिस सुहाया है।
तैसैं ही विसेष संख्या काष्ठा कला नाली नाम,
रवि के उदोतमान बासर कहाया है।।
संध्यातैं प्रभात तांई रतिनाम दौनौ मिलै,
अहोरात काल संख्या ग्रंथमैं जताया है।
मास ऋतु अयनहै वर्ष परसिद्ध एता,
पर के निमित्तकाल बाहिर बहाया है।।१५१।।

(दोहा)

एकाकी कालानुकी, लखिय न परत लगार।
तातैं पर–संजोग करि, पराधीन विवहार।।१५२।।

गुरुदेवश्री कानजी स्वामी ने उक्त सभी परिभाषाओं को दर्शाते हुए यह विशेष स्पष्टीकरण किया है कि एक 'समय' कालद्रव्य की पर्याय है। जब एक परमाणु मंदगति से आकाश के एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में जाता है, उतने समय में उस प्रदेश में काल की एक पर्याय हो जाती है और उस पर्याय का धारक पर्यायवान कालद्रव्य का क्षेत्र अलग नहीं है।

समय, निमिष, घड़ी आदि जो समय का माप है, वे सब कालद्रव्य की पर्याये हैं और उन व्यवहार पर्यायों का माप परद्रव्य की अपेक्षा से होता

होने से उस व्यवहारकाल को पराधीन कहा जाता है।

इसप्रकार आचार्य कुन्दकुन्ददेव से लेकर गुरुदेवश्री कानजी स्वामी तक के कथन से यह सिद्ध हुआ कि कालद्रव्य को समझने के लिए उसके दो भेद किए हैं। एक निश्चयकाल, जिसका लक्षण वर्तना है अर्थात् निश्चयकाल उत्पाद-व्यय-ध्रुवरूप वर्तन करते हुए अन्य पाँचों द्रव्यों के वर्तन या परिणमन में निमित्त होता है तथा दूसरा ह्न व्यवहारकाल जो माप की अपेक्षा परसापेक्ष होने से पराधीन है और उसके द्वारा लोक में काल/समय का व्यवहार चलता है।

आचार्यदेव यह भी कहते है कि वस्तुत: सभी द्रव्य पूर्ण स्वतंत्र, स्वाधीन है, परनिरपेक्ष ही हैं; परन्तु उनका कथन पर सापेक्ष भी होता है; अत: दोनों की अपेक्षाओं को समझ कर यथार्थ श्रद्धान करना चाहिए। कालद्रव्य किसी अन्य द्रव्य को बलात् परिणमन नहीं कराता; किन्तु जब द्रव्य स्वयं स्वाधीनता से परिणमन करता है तो कालद्रव्य उसमें निमित्त होता है। ●

पर्यूषण पर्व सानन्द सम्पन्न

इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ श्री दि. जैन मारवाड़ी मन्दिर में पण्डित सतीशकुमारजी कासलीवाल, महिदपुर के दोनों समय प्रवचन, प्रौढ़कक्षा एवं तत्त्वचर्चा के माध्यम से धर्मप्रभावना हुई।

एलोरा (औरंगाबाद) : यहाँ श्री पार्श्वनाथ ब्रह्मचर्याश्रम जैन गुरूकुल में पर्व के अवसर पर प्रात: प्रक्षाल-पूजन के पश्चात् पण्डित गुलाबचन्दजी बोरालकर के रत्नकरण्डश्रावकाचार पर तथा रात्रि में पण्डित प्रदीपजी माद्रप के विविध विषयों पर मार्मिक प्रवचन हुये। सांयकाल विद्यार्थीयों के लिये विशेष कक्षा एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम हुये।

रतलाम (म.प्र.) : यहाँ दोनों मन्दिर में प्रात: एवं रात्रि में पण्डित पद्मकुमारजी अजमेरा के मोक्षमार्गप्रकाशक, रत्नकरण्डश्रावकाचार एवं दशधर्म पर मार्मिक प्रवचन हुये।

उदयपुर (प्रभातनगर) : यहाँ पण्डित सुनीलकुमारजी नाके के प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक एवं रात्रि में दशधर्म पर मार्मिक प्रवचन हुये। दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र एवं छहढ़ाला ग्रन्थ पर कक्षा ली गई।

कर्रापुर (म.प्र.) : यहाँ पण्डित मुरारीलालजी जैन, नरवर द्वारा तीनों समय प्रवचन एवं कक्षा के माध्यम से धर्मप्रभावना हुई।

केसली (म.प्र.) : यहाँ पण्डित कमलकुमारजी जैन, पिड़ावा के तीनों समय प्रवचनसार, मोक्षमार्गप्रकाशक एवं दशधर्म पर प्रवचन हुए।

मुम्बई (दादर) : यहाँ पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री, नागपुर के प्रवचनों के माध्यम से महती धर्मप्रभावना हुई। सायंकालीन बालकक्षा एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम विशेष आकर्षण के केन्द्र रहे।

कानपुर (उ.प्र.) : यहाँ पण्डित विनितजी शास्त्री, आगरा के प्रात: मोक्षमार्ग प्रकाशक एवं रात्रि में दशधर्म पर सारगर्भित प्रवचन हुए।

इटावा (राज.) : यहाँ पण्डित राहुलजी जैन, अलवर के प्रात: बारह भावना, दोपहर में छहढ़ाला एवं रात्रि दशधर्म पर प्रवचन हुए।

अहमदाबाद (ओढ़व) : यहाँ पण्डित राकेशकुमारजी शास्त्री, लिधौरा के प्रात: रत्नकरण्डश्रावकाचार, दोपहर में छहढ़ाला तथा रात्रि में दशधर्म पर मार्मिक प्रवचन हुये।

गरोठ (म.प्र.) : यहाँ पण्डित धनकुमारजी शास्त्री के रात्रि में दशधर्म पर प्रवचन हुए तथा पण्डित विनयकुमारजी जैन के प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचन हुए।

सोलापुर (महा.) : यहाँ श्री दि. जैन बुवणे मन्दिर में पण्डित विजयकुमारजी कालेगोरे के प्रात: रत्नकरण्डश्रावकाचार एवं रात्रि में दशधर्म पर मार्मिक प्रवचन हुये। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये।

अकाझिरी (म.प्र.) : यहाँ पण्डित नितुलजी शास्त्री, भिण्ड के प्रात: लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र एवं रात्रि में दशधर्म पर सारगर्भित प्रवचन हुए। इस अवसर पर अ. भा. जैन युवा फैड. के अन्तर्गत आदिनाथ युवा मण्डल के संयोजन में आचार्य कुन्दकुन्द सत्साहित्य विक्री केन्द्र की स्थापना की गई; जिसका उद्घाटन श्री मदनलालजी जैन द्वारा किया गया। **ह्न देवेन्द्र जैन, अकाझिरी**

कोलारस (म.प्र.) : यहाँ पण्डित प्रशान्तकुमारजी मोहरे, सोलापुर के प्रात: तत्त्वार्थसूत्र, दोपहर में छहढ़ाला एवं रात्रि में दशधर्म पर मार्मिक प्रवचन हुये। फैडरेशन तथा पाठशाला की स्थापना की गई।

धामपुर (उ.प्र.) : यहाँ पण्डित राहुलजी शास्त्री, विनौता के प्रात: मोक्षमार्ग प्रकाशक एवं रात्रि में दशधर्म पर सारगर्भित प्रवचन हुए।

नरवर (म.प्र.) : यहाँ पण्डित दीपेशकुमारजी शास्त्री, गुढ़ा के प्रात: मोक्षमार्ग प्रकाशक एवं रात्रि में दशधर्म पर सारगर्भित प्रवचन हुए।

सिकन्दराबाद (आ.प्र.) : यहाँ पण्डित वरूणजी शाह, मुम्बई के प्रात: समयसार, दोपहर में परमात्मप्रकाश एवं रात्रि में जैन सिद्धान्त प्रश्नोत्तरमाला पर मार्मिक प्रवचन हुए।

महिदपुर (म.प्र.) : यहाँ पण्डित अनुराजजी जैन, फिरोजाबाद के प्रात: छहढ़ाला एवं रात्रि में दशधर्म पर मार्मिक प्रवचन हुये।

बाल साहित्य की धूम...

मुम्बई (महा.) : डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैय्या द्वारा बालकों को ध्यान में रखकर लिखी गई जैन के.जी. एवं जैन नर्सरी नामक धार्मिक पुस्तकों की पर्यूषण पर्व के दौरान विशेष माँग रही; मुम्बई के विभिन्न उपनगरों में 55,000 रुपयों का बाल साहित्य इस अवसर पर विक्रय हुआ तथा लोगों द्वारा गुजराती, मराठी एवं अंग्रेजी में भी इन किताबों की मांग की गई।

धर्मप्रभावना

1) **जयपुर (राज.) :** यहाँ श्री दि. जैन मन्दिर, जवाहरनगर में दिनांक 1 सितम्बर से 29 सितम्बर, 2004 तक लगभग एक माह रात्रि में पण्डित राजेशकुमारजी शास्त्री, शाहगढ़ के सोलहकारण भावना पर प्रवचन हुये। प्रात: जनता कॉलोनी जैन मन्दिर में प्रवचन एवं सायंकाल बालकक्षा तथा रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

2) **भीण्डर (राज.) :** यहाँ श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर में कुन्दकुन्द वीतराग-विज्ञान समिति उदयपुर के तत्त्वावधान में दिनांक 10 से 18 अक्टूबर, 2004 तक शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित आशीषकुमारजी शास्त्री, टीकमगढ़ के दोनों समय प्रवचन तथा दोपहर में निश्चय-व्यवहार पर प्रौढ़ों के लिये कक्षा एवं रात्रि में बालकक्षा ली गई। **ह्न सुनीलकुमार वक्तावत**

श्री कुन्दकुन्द कहान मंगल ट्रस्ट

श्री 1008 नेमिनाथ दि. जिनबिम्ब पंचकल्या

(शुक्रवार, दिनांक 26 नवम्बर से गुरू

कार्यक्रम स्थल : नारायण डिग्री कॉलेज (क्री

अत्यन्त आनन्द एवं उल्लास के साथ सूचित करते हुए अपार हर्ष हो रहा है कि आध्यात्मिक सत्पुरु विभूषित वटेश्वर–शौरीपुर क्षेत्र के निकट शिकोहाबाद नगरी में श्री नेमिनाथ दि. जिनबिम्ब पंचकल्याण अष्टधातु से निर्मित अन्तर्मुखी परमशांत श्री 1008 नेमिनाथ भगवान की 51 ईंच पद्मासन प्रतिमा के स खड़गासन गुलाबी एवं श्वेत पाषाण से निर्मित मनोहारी जिनबिंब प्रतिष्ठा–विधिपूर्वक विराजमान किये

विद्वत्समागम

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर
डॉ. उत्तमचन्दजी जैन, सिवनी
पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, देवलाली
पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी, उज्जैन
पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन, आगरा
पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन, जबलपुर
पण्डित प्रकाशदादाजी ज्योतिर्विद, मैनपुरी

मांगलिक

प्रतिदिन प्रात: 5 बजे से पूज

26 नवम्बर – शांतिजाप, मंगल कलश एवं जिनेन्द्र शोभायात्रा, ध
27 नवम्बर – घटयात्रा जुलूस, वेदी, कलश, ध्वज शुद्धि, गर्भक
28 नवम्बर – गर्भकल्याणक – 16 स्वप्नों का फल, माता व
29 नवम्बर – जन्मकल्याणक – विशाल जुलूस, इन्द्र द्वारा ताण
30 नवम्बर – तपकल्याणक – नेमिकुमार की बारात, तपकल्य
01 दिसम्बर – ज्ञानकल्याणक – आहारदान, समवशरण रचना
02 दिसम्बर – मोक्षकल्याणक – गिरनार पर्वत रचना, रथयात्रा

परम संरक्षक
पं.श्री कैलाशचन्द जैन
श्री अनंतभाई सेठ
श्री विपिनभाई भायाणी

उपाध्यक्ष
मंगलसेन जैन, दिल्ली
अशोक जैन, सिरसागंज
जिनेन्द्रकुमार जैन, मौ

कोषाध्यक्ष
शान्तिलाल जैन काला, भिण्ड
07534-245847

कार्याध्यक्ष
कौशलकिशोर जैन,
मो. 982623317

अध्यक्ष
पदमप्रसाद जैन, दिल्ली
011-23513930

महामंत्री
अशोक जैन, वैभव
छिन्दवाड़ा
मो. 9826128094

निवेदक : श्री 1008 नेमिनाथ दि. जिनबिम्ब

सम्पर्क

रविन्द्र कुमार जैन, मो. 94125-00667, 94